सम्पादकीय

प्रिय मित्रो,

भारतीय राज व्यवस्था के सत्ता प्रतिष्ठानों से जुड़ी बड़ी शख्सियतों की भ्रष्टाचार में संलिप्तता एवं नित्य नए नए घोटालों के पर्दाफाश से देश का प्रत्येक आम नागरिक चिन्तित, विचलित एवं व्यथित है। विकास एवं सुशासन के दावों की पोल, खोलती ये घटनायें, राजनीतिक व्यवस्था में आम आदमी के विश्वास को निरन्तर क्षीण कर रही है। लगभग सवा अरब की जनसंख्या वाला यह विशाल भू–खण्ड एक सशक्त एवं समृद्ध व्यवस्था के रूप में अपनी साख बचाए रखने में कितना सफल है यह एक वस्तुनिष्ठ एवं आवेगरहित मूल्यांकल का विषय है। यदि देश की साख घरेलू एवं अन्तर्राष्ट्रीय मोर्चे पर प्रभावित है तो इसके लिए कौन उत्तरदायी है? यदि वर्तमान सरकार देश की दशा एवं दिशा सुदृढ़ करने में अक्षम साबित हो रही है तो फिर इसका विकल्प क्या है? ये सारे सवाल प्रत्येक सुधी नागरिक के मन मस्तिष्क को एक लम्बे अरसे से झकझोर रहे हैं।

चाहे वह कानून व्यवस्था का सवाल हो, योजनाओं के वास्तविक क्रियान्वयन का प्रश्न हो, संसदीय परम्पराओं एवं मर्यादाओं का विषय हो अथवा जनप्रतिनिधियों में राजनीतिक एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता एवं सेवा भाव के ह्रास का सवाल सब कुछ राज व्यवसाी की निर्बलता एवं मजबूत संकल्प शक्ति के अभाव की ओर संकेत करते हैं।

विडम्बना यह है कि इन सबके बावजूद व्यक्ति को राज्य से ऊपर तरजीह देने की जिस प्रकृति का विकास हुआ है वह भारतीय राज–व्यवस्था के लिए हितकर नहीं है। कहने के लिए तो संसदीय प्रजातंत्र के लिए अपरिहार्य सारी संस्थाएँ क्रियाशील हैं, किन्तु कार्यशैली एवं परिणामों के आधार पर इनका मूल्यांकन किया जाए तो नैराश्य का घोर अंधकार ही दिखाई पड़ता है। अपने स्वार्थों के वशीभूत यदि सत्ता के प्रतिष्ठानों का दुरुपयोग इसी तरह बढ़ता रहा तो विश्वमंच पर सशक्त भारत की छवि कायम करने में सरकारें अक्षम सिद्ध होंगी।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि कोई भी राष्ट्र सिर्फ औद्योगिक प्रगति, सैन्य क्षमता एवं सकल घरेलू उत्पाद की दर में वृद्धि कर शक्ति सम्वर्द्धन नहीं कर सकता। इन कारकों के साथ–साथ राष्ट्रीय चरित्र एवं लोक नैतिकता के धरातल पर हम निरन्तर कमजोर होते जा रहे हैं। ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर नई ऊचाईयों को छूने वाला एक प्रतिबद्ध बौद्धिक समाज, समृद्ध बौद्धिक सम्पदा, विशाल मानव संसाधन एवं विपुल प्राकृतिक सम्पदा के बावजूद कहीं न कही हमारी नीतियाँ एवं उनके क्रियान्वयन से जुडे लोगों का विचलन अवश्य है जिसके कारण निर्धनता बढ़ रही है, देश का पेट भरने वाला किसान आत्महत्या के लिए विवश है, मातृ शक्ति असुरक्षित है, युवा शक्ति दिगभ्रमित है; और देश के अरबों–खरबों का धन चन्द ठेकेदारों, व्यवसायियों, नौकरशाहों एवं राजनेताओं एवं उनके आश्रितों की तिजोरियां भर रहा है। भारत नवनिर्माण का राग अलापने वाली सत्ता वास्तविक विकास एवं लोकउत्थान से विमुख हो आत्ममुग्धता की मुद्रा में आगामी चुनावों के बाद सत्ता पर काबिज होने के लिए प्रयासरत है। भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबे नेता एवं नौकरशाह देश की आन्तरिक दुर्व्यवस्था के

लिए उत्तरदायी है। हमारी आन्तरिक व्यवस्था की हालत एवं कमजोर नेतृत्व के चलते ही चीन हमारी सीमा में घुसपैठ करता है, पाकिस्तान हमारे विरुद्ध आतंकवादी गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है, नेपाल एवं भूटान चीन से नजदीकियाँ बढ़ा रहे हैं, अफगानिस्तान में हमारी ढुलमुल नीति से दिशा विहीनता का सकेत मिलता है, अंतराष्ट्रीय मंचो पर हमारी आवाज प्रभावहीन है। निरन्तर घोटालों एवं भ्रष्टाचार की घटनाओं में हमारी निर्बलता, नीतिगत विफलता, एवं लोक नैतिकता की क्षीणता प्रतिबम्बित हो रही है। एक सशक्त राष्ट्रीय चरित्र निर्माण में राज व्यवस्था के सूत्रधारों का आचरण आम जनता के लिए 'रोल मॉडल' प्रस्तुत करता है लेकिन मंत्रियों एवं नौकरशाहो से जुड़ी भ्रष्टाचार की घटनाएं निचले स्तर पर भ्रष्टाचार के नए–नए मानक प्रस्तुत कर रही हैं। फलतः सम्पूर्ण व्यवस्था के प्रति आम आदमी का असंतोष एवं आत्मविश्वास बढ़ता जा रहा है। प्रजातांत्रिकता के नाम पर जिस तरह वर्तमान सरकार मे सत्ता का संचालन दो केन्द्रो से हो रहा है तथा जहाँ निर्णय प्रजातांत्रिक प्रक्रिया की बजाए एक व्यक्ति के निर्णय को सर्वमान्य निर्णय के रूप में प्रस्तुत करने की परम्परा चल पड़ी है उससे सत्ता के प्रतिष्ठानों में बढ़ते भ्रष्टाचार को स्वीकार करने के लिए राष्ट्र विवश एवं बाध्य है। यह स्थिति भारतीय राज व्यवस्था के लिए अहितकर एवं चिन्तनीय है।

इसलिए सम्पूर्ण तंत्र में आमूल परिवर्तन के लिए हमें वैसे जनप्रतिनिधियों के संसद में भेजने की आवश्यकता है जो भारत नव–निर्माण की खोखली प्रतिबद्धता से नही, अपितु भारतीय राज व्यवस्था को सशक्त एवं सुदृढ़ करने की वास्तविकता प्रतिबद्धता से लसित हों । हमें ऐसी सरकार की अपेक्षा है जो राष्ट्रहित को निजीहित एवं सांगठनिक हितों से ऊपर रखते हुए एक सशक्त एवं दृढ़ इच्छा–शक्ति वाली राज व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती हो । इस राष्ट्रधर्म के निर्वाह के लिए राजनेताओं के साथ–साथ राजनीतिक प्रक्रियाओं में बौद्धिक जगत के सार्थक हस्तक्षेप की महती आवश्यकता है, ताकि एक सुखद, सर्वहितकारी, सुदृढ़, सुशासित एवं दृढ़ निश्चयी सत्ता का निर्माण हो सके जो विकास के साथ'–साथ राष्ट्रीय चरित्र निर्माण एवं लोक नैतिकता के पोषण एवं सम्वर्द्धन के प्रति संकल्पित हो। तभी हम अपनी खोई, प्रतिष्ठा, शक्ति एवं समृद्धि को पुर्नस्थापित करते हुए राज–व्यवस्था को सशक्तता एवं जीवत्ता प्रदान कर सकेंगे तथा हमारा लोकतांत्रिक गणराज्य अपनी सुखमय उपलब्धियों पर झूम उठेगा।

आप का ही केवल

नैनीताल
बुद्धपूर्णिमा

(मधुरेन्द्र कुमार)